राज्य शिक्षा-शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार द्वारा विकसित

वर्णिका

नवीं कक्षा की पूरक हिन्दी पाठ्यपुस्तक

©BSTBPC
NOT TO BE PRINTED

बिहार विद्यालय परीक्षा समिति, पटना
(उच्च माध्यमिक प्रभाग)

दिशा-बोध :

श्री हसन वारिस, निदेशक (प्रभारी), राज्य शिक्षा-शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार।
श्री रघुवंश कुमार, निदेशक (शैक्षणिक), बिहार विद्यालय परीक्षा समिति (उच्च माध्यमिक प्रभाग) पटना।
डॉ० सैय्यद अब्दुल मुईन, विभागाध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा, राज्य शिक्षा-शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार।
डॉ० कासिम खुर्शीद, विभागाध्यक्ष, भाषा शिक्षा विभाग, राज्य शिक्षा-शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार।

पाठ्यपुस्तक विकास समिति

अध्यक्ष, हिंदी भाषा समूह

प्रो० भृगुनंदन त्रिपाठी, हिंदी विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना।

समन्वयक, हिंदी भाषा समूह

डॉ० हेमंत कुमार हिमांशु, सहायक संपादक, ज्ञान विज्ञान, पटना।

सदस्य, हिंदी भाषा समूह

श्री ब्रजेश पाण्डेय, व्याख्याता, हिंदी विभाग, एल० एस० गांधी कॉलेज (मगध विश्वविद्यालय), पटना।
डॉ० सत्येन्द्र कुमार पाठक 'प्रियेश', शिक्षक, एकलव्य एजुकेशनल कॉम्प्लेक्स, पटेल नगर, पटना।

अकादमिक सहयोग

डॉ० इम्तियाज आलम, व्याख्याता, भाषा विभाग, राज्य शिक्षा-शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार।
डॉ० अर्चना, व्याख्याता, राज्य शिक्षा-शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार।

अकादमिक संयोजक, पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तक विकास समिति

श्री ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी

©BSTBPC
NOT TO BE PRINTED

आमुख

बिहार प्रांत के विद्यालयों में बहुआयामी शिक्षण की परिकल्पना को साकार करने के लिए सरकार द्वारा आहूत विशेषज्ञों के गंभीर तथा वस्तुपरक विमर्श के निष्कर्षों के अनुरूप निर्मित नवीन पाठ्यक्रम के अनुसार नौवें वर्ग के छात्रों के लिए यह पूरक पुस्तक तैयार की गई है।

भाषा मात्र संवाद ही नहीं ज्ञानार्जन का भी माध्यम होती है। इतिहास, पुराण, धर्म, आचार, विज्ञान, वाणिज्य, कला, संस्कृति, समाज, साहित्य आदि के विषय में जानना और विशेषकर नयी पीढ़ी को परिचित कराना मानवीय सभ्यता की प्राथमिक आवश्यकता होती है। इस आवश्यकता की पूर्ति अपनी भाषा में होना हमें अनेक भटकाव से बचा लेता है। माता वही है जो अपने शिशु को पयपान कराने से लेकर उसे मनोरंजन और चलने की सीख तक दे। ठीक उसी तरह मातृभाषा वही है जो संवाद से लेकर सर्वांगपूर्ण ज्ञानार्जन तक कराये। हमारे विशेषज्ञ आचार्यों ने ज्ञान क्षेत्र में अपने राज्य के कला वैभव के महत्त्व की अनिवार्यता को महसूस करते हुए विद्यालयस्तरीय पाठ्यक्रम में इसे सम्मिलित करने का जो निर्णय लिया है उसके आधार पर तैयार इस पुस्तक में बिहार के कला क्षेत्र के विभिन्न अंगों से संबंधित महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों और उस कला के विकास क्रम का हर संभव सरल-सहज हिन्दी में परिचय प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

संगीत, चित्र, नाट्य, नृत्य, सिनेमा, वाद्य आदि क्षेत्रों में बिहार का वैभव अंतर्राष्ट्रीय आकर्षण का विषय रहा है। वीणा वादक सम्राट समुद्रगुप्त से लेकर गोंड नर्तक रामदहिन तथा चित्रकार शिवन पासवान तक विभिन्न कलाओं की समृद्ध परंपरा बिहार में रही है परंतु अबतक विडंबना यह रही है कि अपनी ही कला-समृद्धि के बारे में हमारे अपने ही छात्र कुछ नहीं जानते। कितने गौरव की बात है कि क्रिकेट खिलाड़ी सचिन तेंदुलकर के विषय में बिहार के छात्र किसी मराठी से कम नहीं जानते परंतु कितनी शर्म की बात है कि हमारे कॉलेज तक के छात्रों-शिक्षकों को नहीं पता होता है कि पं० रामचतुर मलिक कौन थे या राधामोहन बाबू अथवा हरि उप्पल का बिहार के नवनिर्माण में क्या महत्त्व रहा है। इस पुस्तक का उद्देश्य नौंवी कक्षा में अपने राज्य की कला-संपदा और इस रूप में कला के प्रति एक स्वाभाविक जिज्ञासा तथा रुझान पैदा करना है। हमारा विश्वास है कि इस पुस्तक के अध्यापन के क्रम में शिक्षक वर्ग को भी अपने अध्ययन-क्षेत्र को और विस्तार देने का मौका मिलेगा।

एस० सी० ई० आर० टी० इस पुस्तक के विकास के लिए बनाई गई पाठ्यपुस्तक विकास समिति के प्रति कृतज्ञता प्रकट करती है। हिंदी भाषा समूह के अध्यक्ष प्रो० भृगुनंदन त्रिपाठी, समन्वयक डॉ० हेमंत कुमार हिमांशु, सदस्य श्री ब्रजेश पाण्डेय और डॉ० सत्येन्द्र कुमार पाठक 'प्रियेश' के प्रति हम विशेष आभार प्रकट करते हैं। इन्होंने गहरी सूझबूझ, अथक परिश्रम और भावात्मक लगाव के साथ इस कार्य को तत्परतापूर्वक सम्पन्न किया। पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तक विकास के अकादमिक संयोजक श्री ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी के प्रति भी हम कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

पुस्तक आपके हाथों में है। इसे पढ़ने-पढ़ाने के प्रसंग में हुए अनुभवों से उपजे परामर्शों एवं सुझावों की हमें प्रतीक्षा रहेगी।

हसन वारिस
निदेशक (प्रभारी)
राज्य शिक्षा-शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार

प्रस्तुत पुस्तक

साहित्य, कला और नीति के प्रकांड विद्वान राजा भर्तृहरि ने कहा था कि ''साहित्यसंगीतकलाविहीनः साक्षात् पशुः पुच्छविषाणहीनः।'' यानी साहित्य तथा संगीत कला से विहीन व्यक्ति साक्षात पशु है। पशु से उसका अंतर मात्र इतना होता है कि उसके सींग और पूँछ नहीं होते। संगीत, चित्र, अभिनय, मूर्ति आदि कुल चौंसठ कलाओं का उल्लेख भारतीय शास्त्रों-पुराणों में मिलता है जिनमें सीना-पिरोना, बेलबूटे काढ़ना, शर्बत तैयार करना, पकवान बनाना, केश आदि का शृंगार करना आदि की भी गणना कला के अंतर्गत ही होती आई है।

कहा जाता है कि गहना पहनते तो सब हैं परन्तु 'झमकाना' किसी-किसी को आता है। यह 'झमकाना' ही कला की संज्ञा पाता है। तात्पर्य यह कि जीवन के किसी भी भाग में विशेष सुन्दरता-विधान के लिए जो कर्म किया जाता है वही कला होता है। सोना व्यक्ति को धनी बनाता है। व्यक्ति की सुंदरता में वृद्धि करने के लिए उसे गहना बनना पड़ता है। गहने का निर्माण कला-कर्म के क्षेत्र में आता है।

संगीत, नृत्य, चित्र, मूर्ति, अभिनय, गृहनिर्माण, गृहसज्जा, रूपसज्जा, पाक कला आदि कलाओं में अनेक भेदोपभेद होते हैं। गायन, नाच, विभिन्न बाजाओं को बजाना, चित्रकारी, मूर्ति-निर्माण, अभिनय आदि कलाओं में बिहार राज्य का अपना एक समृद्ध अतीत रहा है परंतु दुर्भाग्यवश अपने इस वैभव से यह राज्य आश्चर्यजनक स्तर तक अनजान रहा है। पटना संग्रहालय देखने तो बहुत लोग जाते हैं परंतु बहुत कम लोग जानते हैं कि उसमें रखी यक्षिणी की लंबी मूर्ति की कलात्मकता विश्व प्रसिद्धि पा चुकी है। हमें सोचना चाहिए कि वैसी उन्नत स्तर की मूर्ति जब बनी होगी तब का काल मूर्तिकला में अवश्य उन्नत रहा होगा। उस काल में वैसी, उससे कम और उससे अधिक कलात्मक अनेक मूर्तियों का निर्माण हुआ होगा जिनके संबंध में जानकारी के प्रति हमें सचेत होना चाहिए। मिथिला की चित्रकारी को आज विश्वस्तरीय बाजार मिल चुका है और जगदंबा देवी, सीता देवी तथा शिवन पासवान जैसे चित्रकारों को अनेक सम्मान मिल चुके हैं परंतु कितने लोगों को मालूम है कि उन चित्रों की विशेषता को घर-आँगन से बाहर लाकर प्रसिद्धि दिलाने का प्राथमिक श्रेय अंग्रेज अधिकारी विलियम जी० आर्चर और उसकी पत्नी को जाता है। आर्चर मिथिलांचल के दौरे में दरभंगा, मधुबनी, पूर्णिया आदि के गाँवों की दीवारों पर बने लोकचित्रों को देख चमत्कृत रह गया था और उन चित्रों के फोटोग्राफ उसने ब्रिटिश लाइब्रेरी लंदन को भेजे थे।

यही नहीं उसकी पत्नी ने उन चित्रों पर एक पुस्तक भी लिखी थी।

हमें देखना चाहिए कि हमारे वर्तमान भारतीय या विशेषकर बिहार के प्रशासनिक अधिकारी, अभियंता या अन्य विषयों के प्राध्यापक भी क्या ऐसी कला-चेतना से युक्त होते हैं कि उसका मूल्य पहचान सकें? यह संस्कार हमारी ज्ञानोपलब्धि का अंग क्यों नहीं बन पा रहा है? हमें समझना चाहिए कि कला-चेतना के अभाव में विज्ञान भी प्राणहीन एवं प्रशासन दिशाहीन बन जाता है।

बिहार में कला के विभिन्न पक्षों की पुष्ट परंपरा रही है। विभिन्न पुराणों में उनके उल्लेख के अलावा ध्वंसावशेषों में भी उनकी स्थिति के प्रमाण सुलभ हैं परंतु हमारा शिक्षित समाज आज भी उनका मूल्य नहीं समझ पा रहा है। बिहार में अभी दर्जनों प्राचीन राजमहल, मंदिर, मस्जिद, कुँए आदि मौजूद हैं जिनका स्थापत्य तथा अभियंत्रण की दृष्टि से उल्लेखनीय महत्त्व है। पर्वत के ऊपर बना हुआ रोहतास का किला आज भी पूर्णत: उपेक्षित पड़ा हुआ है जबकि प्राचीन स्थापत्य (भवन निर्माण) की दृष्टि से वह एक मूल्यवान नमूना है। भवन निर्माण में पटना-शैली (पटना कलम) की अपनी विशिष्टताएँ हुआ करती थीं। उसमें काष्ठ पर की गयी नक्काशी और भित्तिचित्र पर मूर्तिकला का आकर्षक समन्वय हुआ करता था। सोनपुर के हरिहरनाथ के मंदिर की कलात्मक विशेषताएँ हमारी मूल्यवान संपदा हैं।

स्थापत्य ही नहीं, मूर्तिकला के क्षेत्र में भी बिहार का वैभवशाली अतीत है परंतु वर्तमान प्राय: कंगाली में गुजर रहा है। प्रत्येक चित्रकार कुछ न कुछ मूर्ति बनाते ही रहते हैं परंतु केवल मूर्तिकला को समर्पित और उसमें नये प्रयोग करने वाला कोई बिहारी मूर्तिकार अभीतक अपनी पहचान नहीं बना सका है। यदि कोई होगा भी तो उसका मूल्य उस तक ही सीमित है। सीतामढ़ी के मूर्तिकार फणिभूषण विश्वास की लगन तथा प्रतिभा का साधनहीनता की मार से लगातार पिटते जाना अकेला उदाहरण नहीं हो सकता। विश्वास साहब ने पौराणिक, लौकिक और सौन्दर्य की दृष्टि से अनेक अत्यंत महत्त्वपूर्ण मूर्तियों का निर्माण किया है। पटना कला-शिल्प महाविद्यालय के पूर्व प्राचार्य अनुनय चौबे में मूर्तिकला की अभूतपूर्व संभावनाएँ विकसित हो रही थीं परंतु इस कला का दुर्भाग्य रहा कि उन्होंने अपनी कला-यात्रा की किशोरावस्था में ही उस मार्ग का त्याग कर दिया और चित्रकारी को समर्पित हो गये।

चित्रकला में बिहार के पास गौरवपूर्ण अतीत भी है और वर्तमान भी। श्याम शर्मा जैसे चित्रकार अभी पूर्ण सक्रिय हैं। चित्रकार अनुनय चौबे को मॉरिशस सरकार ने अपने यहाँ कला-शिल्प महाविद्यालय की स्थापना और विकास के लिए बुलाया है। निश्चय ही अनुनय का वहाँ जाना बिहार के चित्रकार जगत की अंतरराष्ट्रीय उपलब्धि है। राधामोहन बाबू तथा उपेन्द्र महारथी जैसे चित्रकारों-शिल्पकारों ने बिहार में चित्रकला की जो नींव रखी थी उसका विकास दिखाई पड़ रहा है। राधामोहन बाबू द्वारा स्थापित पटना कला-शिल्प महाविद्यालय आज एक ख्यातिलब्ध कला संस्थान है।

बिहार शायद एकमात्र राज्य है जहाँ ध्रुपद जैसे शास्त्रीय संगीत के तीन घराने प्रसिद्ध हो चुके हैं और तीनों– बेतिया घराना, दरभंगा घराना और डुमराँव घराना– ने एक से एक ध्रुपद गायक दिये हैं। ध्रुपद गायन में बिहार का विश्वस्तरीय योगदान रहा है। हमें इसके महत्त्व के अध्ययन के साथ ही इसके आदि प्रेरणास्रोत रहे रोहतास जिले के धनगाँई जैसे सामान्य गाँव की मिट्टी तथा संस्कृति का विशेष अध्ययन-मूल्यांकन करना चाहिए। धनगाँई और जमिरा (पखावज वादक लल्लन बाबू का गाँव) जैसे गाँव शास्त्रीय संगीत के तीर्थस्थल हैं। उनका परिचय हमारे ज्ञान का एक अनिवार्य अंग होना चाहिए, जो नहीं है। बिहार के लोकगायन को विंध्यवासिनी देवी, भरत सिंह भारती, शारदा सिन्हा आदि ने अभूतपूर्व लोकप्रियता दिलाई है परंतु उनके वास्तविक स्वरूप से परिचित होने के लिए हमें अपने राज्य की वैविध्यपूर्ण लोक संस्कृति से सीधे जुड़ना चाहिए। जाँता चलाती हुई औरतों के जँतसार या रोपनी करती हुई रोपनियों के गीत की तन्मयता साज-बाज के साथ गाती हुई किसी गायिका के गायन में कैसे आ सकती है? जबतक हम उस वास्तविक रूप से परिचित नहीं होंगे तब तक भिखारी ठाकुर, विंध्यवासिनी देवी या शारदा सिन्हा के सृजन और गायन का महत्त्व हमारी समझ में नहीं आयेगा।

अभिनय तथा लोकगायन ये दोनों बिहार में इतने वैविध्यपूर्ण तथा समृद्ध रहे हैं कि अनेक नयी-पुरानी प्रतिभाओं का उल्लेख नहीं हो पाना या उचित मूल्यांकन इस पुस्तक में नहीं हो पाना आश्चर्य या आक्रोश का विषय नहीं होना चाहिए। इस पुस्तक की कमियों को समुचित रूप में उजागर करने तथा उन्हें रचनात्मक पूर्ति देने का प्रयास शिक्षक और विशेषज्ञों में होना चाहिए ताकि विद्यार्थियों और अन्य युवाओं में अपनी कला-संस्कृति के अध्ययन के प्रति स्वाभाविक जिज्ञासा पनप सके।

हेमंत कुमार हिमांशु
समन्वयक, हिंदी भाषा समूह

भृगुनंदन त्रिपाठी
अध्यक्ष, हिंदी भाषा समूह

© BSTBPC NOT TO BE PRINTED

अनुक्रम

		पृष्ठ संख्या
1.	बिहार का लोकगायन	11
2.	बिहार की संगीत साधना	17
3.	बिहार में नृत्यकला	26
4.	बिहार की चित्रकला	32
5.	मधुबनी चित्रकला	40
6.	बिहार में नाट्यकला	46
7.	बिहार का सिनेमा संसार	54

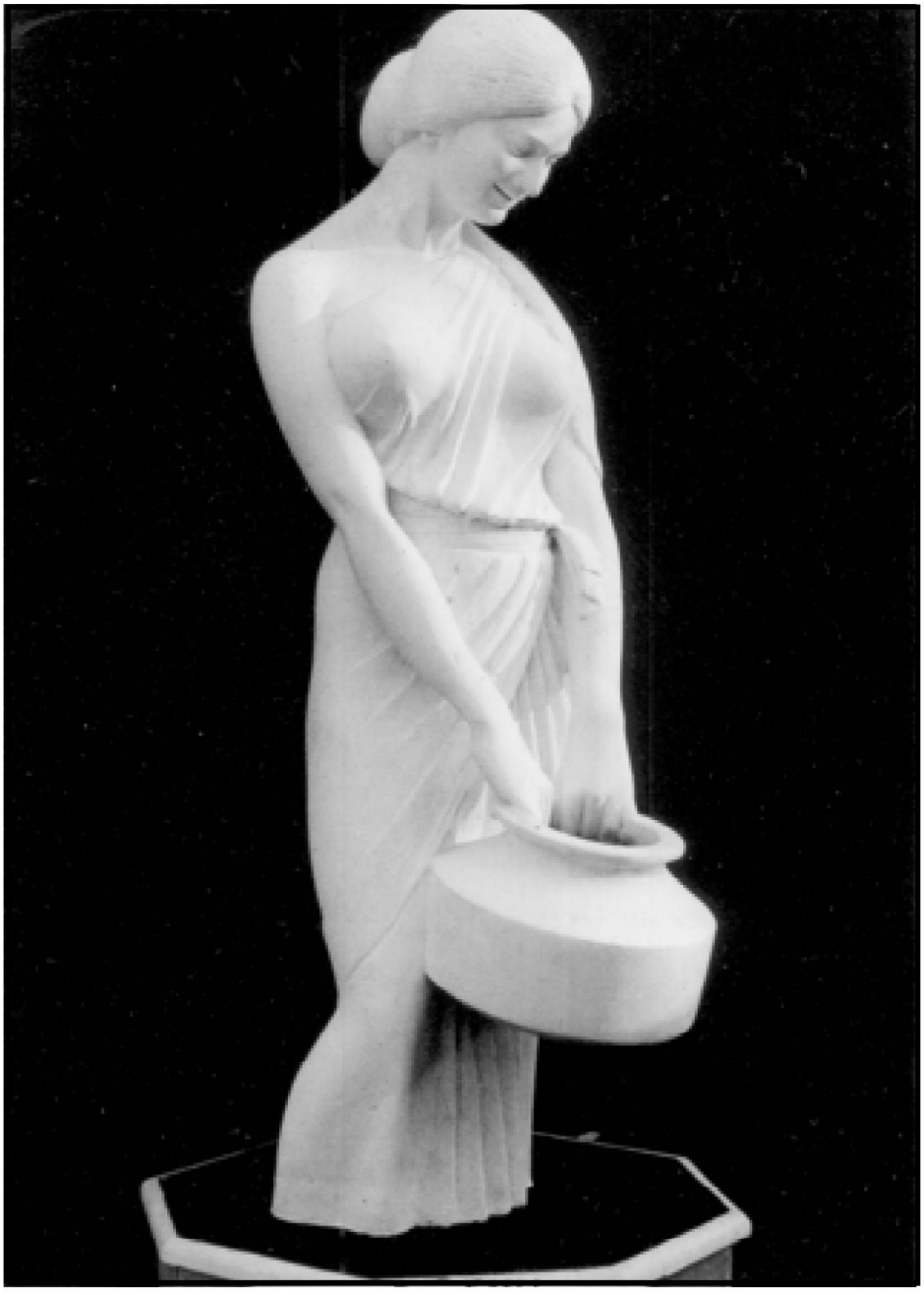

घटधारिणी

फणीभूषण विश्वास की एक मूर्ति (निर्माण में 24 वर्ष लगे)